पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Grade –VII

Sanskrit

Specimen

Copy

Year- 2022-23

अनुक्रमणिका

LESSON No-	TITLE
प्रथम: पाठ:	सुभाशितानि
द्वितीय: पाठ:	दुर्बुद्धि: विनश्यति
तृतीय: पाठ:	स्वाव्लाम्बनाम
चतुर्थ: पाठ:	हास्यबालाक विसम्मेलानाम
पच्च्म: पाठ:	पण्डिता रमाबाई
षष्ठ: पाठ:	सदाचार:
सप्तम: पाठ:	संकल्प: सिद्धीदायक:
अष्टम: पाठ:	त्रिवर्ण: ध्वज:

प्रथमः पाठः सुभाशितानि

सरलार्थ -

क-पृथ्वी के ऊपर जल, अन्न अन्न और सुवचन ये तीन रत्न हैं, परंतु मूर्खों के द्वारा पत्थर के टुकड़े को रत्न का नाम दिया जाता है।

ख-सत्य से पृथ्वी धारण की जाती है। सत्य से सूरज तपता है और सत्य से ही वायु प्रवाहित होती है।सब कुछ सत्य में समाहित है।

ग-दान में, तपस्या में, बल में, विशेष ज्ञान में, विनम्रता में, और नीति में निश्चय ही आश्चर्य नही करना चाहिये।पृथ्वी बहुत से रत्न वाली है।

घ-सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिये। सज्जनों के साथ संगति करनी चाहिये।सज्जनों के साथ विवाद और मित्रता करनी चाहिये। असज्जनों अर्थात दुष्टों के साथ नहीं।

ड-धन धान्य के प्रयोग में और विद्या के संचय में आहार और ? व्यवहार में संकोच को छोड़ने वाला अर्थात उदार मनवाला व्यक्ति सुखी होता है।

च-क्षमा संसार में सबसे बडा वशीकरण है। क्षमा से क्या पूर्ण नही हो सकता? जिसके हाथ में क्षमारुपी तलवार है, उसका दुष्ट व्यक्ति क्या कर सकता है?कुछ बुरा नही कर सकता।

प्रश्नः 2.यथायोग्यं श्लोकांशान् मेलयत-(श्लोकांशों को यथायोग्य मिलाइए-Match the parts of the shlokas correctly.)

'क' - 'ख'

1. धनधान्यप्रयोगेषु - नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
2. विस्मयो न हि कर्त्तव्यः - त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
3. सत्येन धार्यते पृथ्वी - बहुरत्ना वसुन्धरा।
4. सद्भिर्विवादं मैत्रीं च - विद्यायाः संग्रहेषु च।
5. आहारे व्यवहारे च - सत्येन तपते रविः।

उत्तराणि:

'क' - 'ख'

1. धनधान्यप्रयोगेषु - विद्यायाः संग्रहेषु च।

2. विस्मयो न हि कर्त्तव्यः - बहुरत्ना वसुन्धरा।
3. सत्येन धार्यते पृथ्वी - सत्येन तपते रविः।
4. सद्भिर्विवादं मैत्रीं च - नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
5. आहारे व्यवहारे च - त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

प्रश्नः 3.एकपदेन उत्तरत-(एक शब्द में उत्तर दीजिए-Answer in one word.)

(क) पृथिव्यां कति रत्नानि?
(ख) मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?
(ग) पृथिवी केन धार्यते?
(घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत?
(ङ) लोके वशीकृतिः का?
उत्तराणि:
(क) त्रीणि
(ख) पाषाणखण्डेषु
(ग) सत्येन
(घ) सद्भिः
(ङ) क्षमा।

प्रश्नः 4.रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -
(रेखांकित पदों को आधार बनाकर प्रश्न निर्माण कीजिए-Frame questions based on the underlined words.)

(क) <u>सत्येन</u> वाति वायुः।
(ख) <u>सद्भिः</u> एव सहासीत।
(ग) <u>वसुन्धरा</u> बहुरत्ना भवति।
(घ) <u>विद्यायाः</u> संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।
(ङ) सद्भिः <u>मैत्री</u> कुर्वीत।
उत्तराणि:
(क) <u>केन</u> वाति वायुः?
(ख) <u>कैः</u> एव सहासीत?
(ग) <u>का</u> बहुरत्ना भवति?
(घ) <u>कस्याः</u> संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ?
(ङ) सद्भिः <u>किं कां</u> कुर्वीत?

प्रश्न: 5.प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-
(प्रश्नों के उत्तर लिखिए-Answer the following questions.)

(क) कुत्र विस्मयः न कर्तव्यः?
उत्तराणि:
दाने, तपसि, शौर्ये, विज्ञाने, विनये, नये च विस्मयः न कर्तव्यः ।

(ख) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि?
उत्तराणि:
पृथिव्यां जलं, अन्नं सुभाषितम् च त्रीणि रत्नानि सन्ति ।

(ग) त्यक्तलज्जः कुत्र सुखी भवेत्?
उत्तराणि:
धन-धान्य-प्रयोगे, विद्यायाः संग्रहेषु, आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

प्रश्न: 6.मञ्जूषातः पदानि चित्वा लिङ्गानुसारं लिखत- (मञ्जूषा से शब्दों को चुनकर लिंग के अनुसार लिखिए- Fill in the blanks by choosing suitable gender words from the box)

[रत्नानि, वसुन्धरा, सत्येन, सुखी, अन्नम्, बह्निः, रविः, पृथ्वी, सङ्गतिम्]

पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
सुखी	वसुन्धरा	रत्नानि
वह्निः	पृथ्वी	सत्येन
रविः	सङ्गतिम्	अन्नम्

उत्तराणि:

पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
…………………	…………………	…………………
…………………	…………………	…………………
…………………	…………………	…………………

प्रश्न: 7.अधोलिखितपदेषु धातवः के सन्ति? (नीचे लिखे हुए शब्दों में धातुएँ कौन-कौन सी हैं? What are the roots in given words?)

पदम् - धातुः
करोति - ....
पश्य - ....
भवेत् - ....
तिष्ठति - ....
उत्तराणि:
पदम् - धातुः
करोति - कृ
पश्य - दृश्
भवेत् - भू
तिष्ठति - स्था

Class 7 Sanskrit Chapter 1 सुभाषितानि Additional Important Questions and Answers

(1) पद्यांशं पठित्वा अधोदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत- (पद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- Read the extract and answer the questions that follow.)

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

I. एकपदेन उत्तरत

(i) पृथ्वी कथं धार्यते ?
उत्तराणि:
सत्येन

(ii) कः सत्येन तपते ?
उत्तराणि:
रविः

(iii) सर्वं कस्मिन् प्रतिष्ठितम् ?
उत्तराणि:
सत्ये

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत

सत्येन किं किं भवति?
उत्तराणि:
सत्येन पृथ्वी धार्यते, सत्येन रविः तपति, सत्येन एव च वायुः वहति।

III. भाषिककार्यम्-

यथानिर्देशम् रिक्तस्थानानि पूरयत -

(i) सत्येन - अत्र का विभक्ति? – ……………….. (द्वितीया, तृतीया, सप्तमी)
उत्तराणि:
तृतीया

(ii) प्रतिष्ठितम् - अत्र कः धातुः? – ……………….. (तिष्ठ, स्था, प्रति)
उत्तराणि:
स्था

(iii) पर्यायः कः?
(क) वहति - ………………..
(ख) पवनः - ………………..
उत्तराणि:
(क) वाति
(ख) वायुः

(iv) श्लोके किम् अव्ययपदम् अस्ति?
उत्तराणि:
च

(2) शुद्धस्य कथनस्य समक्षे 'आम्' अशुद्धस्य च समक्षे 'नहि' लिखत- (शुद्ध कथन के सामने 'आम्' और अशुद्ध के सामने 'नहि' लिखिए- write आम्'opposite the correct statement and'fe'opposite the incorrect one.)

(i) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि इति मूढाः वदन्ति।

उत्तराणि:

नहि

(ii) क्षमा सर्वं साधयति।

उत्तराणि:

आम्

(iii) सर्वं विज्ञाने प्रतिष्ठितम्।

उत्तराणि:

नहि

(iv) सज्जनैः सह मित्रतां कुर्यात्।

उत्तराणि:

आम्

(v) सद्भिः किंचिद् न आचरेत्।

उत्तराणि:

नहि

(3) अधोदत्तान् शब्दान् परस्परं मेलयत- (निम्नलिखित शब्दों का परस्पर मेल कीजिए- Match the following.)

(क) शब्दार्थाः

'क' - 'ख'
1. पृथ्वी - हस्ते
2. सद्भिः - दुर्जनैः
3. रविः - वहति
4. करे - वसुन्धरा
5. वाति - भानुः
6. लोके - सज्जनैः
7. असद्भिः - संसारे

उत्तराणि:

1. पृथ्वी-वसुन्धरा

2. सद्भिः-सज्जनैः
3. रविः-भानुः
4. करे-हस्ते
5. वाति-वहति
6. लोके-संसारे
7. असद्भिः-दुर्जनैः।

(ख) श्लोकांशा:'

'क' - 'ख'
1. आहारे व्यवहारे च - (i) किं करिष्यति दुर्जनः।
2. विस्मयो न हि कर्तव्यो - (ii) बहुरत्ना वसुन्धरा।
3. मूरैः पाषाणखण्डेषु - (iii) त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
4. शान्तिखड्गः करे यस्य - (iv) नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
5. सद्भिर्विवाद मैत्री च - (v) रत्नसंज्ञा विधीयते।
उत्तराणि:
1. (iii) त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
2. (ii) बहुरत्ना वसुन्धरा।
3. (v) रत्नसंज्ञा विधीयते।
4. (i) किं करिष्यति दुर्जनः।
5. (iv) नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।

(4) (क) मञ्जूषायाः सहायतया श्लोकस्य अन्वयं पूरयत- (मञ्जूषा की सहायता से श्लोक का अन्वय पूरा कीजिए- Complete the prose order of the shloka with help of the box.)

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा॥
दाने तपसि .... विज्ञाने विनये नये............
... न हि कर्तव्यो .... बहुरत्ना (अस्ति)।।
मञ्जूषा- विस्मयः, च, वसुन्धरा, शौर्ये
उत्तराणि:
शौर्ये, च विस्मयः, वसुन्धरा।

(ख) मञ्जूषायाः सहायतया श्लोकस्य भावार्थं पूरयत- (मञ्जूषा की सहायता से श्लोक का भावार्थ पूरा कीजिए- Complete the central idea of the verse with help of the box.)

'क्षमावशीकृतिः' लोके क्षमया किं न साध्यते।

यः जनः .... भवति, सर्वे जनाः तस्य ....भवन्ति। .... एव सर्वाणि कार्याणि ....|

मञ्जूषा- क्षमा, वशे, क्षमाशीलः, साधयति।

उत्तराणि:

क्षमाशीलः, वशे, क्षमा, साधयति।

बहुविकल्पीयप्रश्नाः(1) रेखाङ्कितपदम् आधृत्य उचितविकल्पेन प्रश्ननिर्माणं कुरुत। (रेखांकित पद के आधार पर उचित विकल्प द्वारा प्रश्न निर्माण कीजिए- On the basis of underlined words frame questions with the appropriate option.)

(i) पृथिव्यां <u>त्रीणि</u> रत्नानि। (कति, का, कानि)

उत्तराणि:

पृथिव्यां <u>कति</u> रत्नानि?

(ii) क्षमा वशीकृतिः <u>लोके</u>। (कुतः, कुत्र, का)

उत्तराणि:

क्षमा <u>कुत्र</u> वशीकृतिः?

(iii) <u>विस्मयः</u> न हि कर्त्तव्यः। (किम्, कः, का)

उत्तराणि:

<u>कः</u> न हि कर्त्तव्यः?

(iv) सर्वं <u>सत्ये</u> प्रतिष्ठितम्। (के, केन, कस्मिन्)

उत्तराणि:

सर्वं <u>कस्मिन्</u> प्रतिष्ठितम्?

(2) प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः उचितं पदं चित्वा श्लोकांशान् पूरयत। (दिए गए विकल्पों से उचित पद चुनकर श्लोकांश पूरे कीजिए। Pick out the appropriate word from the options given and complete the following verses.)

(i) मूढः .... रत्नसंज्ञा विधीयते। (धनधान्यप्रयोगेषु, पाषाणखण्डेषु, पृथिव्याम्)
उत्तराणि:
पाषाणखण्डेषु

(ii) सद्भिः कुर्वीत .... । (सुभाषितम्, प्रतिष्ठितम्, सङ्गतिम्)
उत्तराणि:
सङ्गतिम्

(iii) .... करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः। (क्षमाखड्गः, शान्तिखड्गः, क्षमावशीकृतिः)
उत्तराणि:
शान्तिखड्गः

(iv) सत्येन .... पृथ्वी। (साध्यते, भवेत्, धार्यते)
उत्तराणि:
धार्यते

द्वितीय: -पाठ: - दुर्बुद्धि: विनश्यति

सरलार्थ

क-मगध प्रदेश में फुल्लोत्पल नामक तालाब था।वहाँ संकट और विकट नामक दो हंस रहते थे।कम्बुग्रीव नामक उन दोनो का मित्र एक कछुआ भी वहीं रहता था।

ख-इसके पश्चात एक बार मछुआरे वहाँ आये और कहा-हम सब कल मछली ,कछुए आदि को मारेंगे।यह सुनकर कछुआ बोला-मित्र,क्या तुमने मछुआरों की बातचीत सुनी। अब मैं क्या करुँ? दोनों हंस बोले-सुबह जो उचित है,वह करना चाहिए। कछुआ बोला- ऐसा मत करो,जिससे मैं दूसरे तालाब पर जा सकूँ, वैसा करो। दोनों हंस बोले- हम दोनों क्या करें? कछुआ बोला- मैं तुम दोनों के साथ आकाश मार्ग से दूसरे स्थान पर जाने की इच्छा करता हूँ।

ग-हंस बोला-यहाँ क्या उपाय है? कछुआ बोला-तुम दोनों एक लकड़ी के डंडे को चोंच से पकड़ो। मैं लकड़ी के डंडे के बीच में लटक कर तुम दोनों के पंखों

के बल से सुखपूर्वक जा सकता हूँ। हंस बोले-यह उपाय हो सकता है। पर यहाँ एक हानि भी है। हमदोनों के द्वारा ले जाए जाते हुए तुम्हें देखकर लोग कुछ बोलेंगे ही। यदि तुम उत्तर दोगे तब तुम्हारा मरना निश्चित है,इसलिए तुम यही रहो। उसे सुन कर गुस्से से कछुआ बोला-क्या मैं मूर्ख हूँ? मैं कोई उत्तर नही दुंगा। मैं कुछ भी नही बोलुंगा। इसलिए जैसा कहता हूँ,वैसा तुम दोनों करो।

घ-इस प्रकार लकड़ी के डंडे पर लटके हुए कछुए को नगर के लोगों ने देखा।

बाद मे पीछे दौड़े और बोले-अहा-बहुत अचम्भा है। हंसों के साथ कछुआ भी उड़ रहा है। कोई बोला- यदि यह कछुआ कैसे भी गिरता है ,तब यही इसको पका कर खाऊँगा। दूसरा आदमी बोला-तालाब के किनारे पका कर खाऊँगा। अनय बोले -घर ले जा कर खाऊँगा।

ङ-उनके वचनों को सुनकर कछुआ बहुत कोधित हुआ और अपने मित्रों को दिया वचन भूलकर बोल पड़ा कि तुम सब खाक खाओगे। उसी पल कछुआ जमीन पर गिर पड़ा और लोगों ने उसे मार दिया। इसलिए कहा जाता है कि कल्याण करनेवाले मित्रों की बात जो नही मानता है वह लकड़ी से गिरे कम बुद्धीवाले कछुए के समाान नष्ट हो जाता है।

प्रश्न: 2.एकपदेन उत्तरत- (एक शब्द में उत्तर दीजिए- Answer in one word.)

(क) कूर्मस्य किं नाम आसीत् ?
उत्तराणि:
कम्बुग्रीवः

(ख) सरस्तीरे के आगच्छन्?
उत्तराणि:
धीवराः

(ग) कूर्मः केन मार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति?
उत्तराणि:
आकाशमार्गेण

(घ) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा के अधावन् ?
उत्तराणि:
पौराः।

प्रश्न: 4.मञ्जूषातः क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत- (मञ्जूषा से क्रियावाचक शब्दों को चुनकर वाक्यों की afd ailfote- Fill in the blanks of the sentences by suitable verbs from the box.)

अभिनन्दति, भक्षयिष्यामः, इच्छामि, वदिष्यामि, उड्डीयते, प्रतिवसति स्म

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि ……..
उत्तराणि:
हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।

(ख) अहं किञ्चिदपि न …….
उत्तराणि:
अहं किञ्चिदपि न वदिष्यामि।

(ग) यः हितकामानां सुहृदां वाक्यं न …..
उत्तराणि:
यः हितकामानां सुहृदां वाक्यं न अभिनन्दति ।

(घ) एकः कूर्मः अपि तत्रैव …………
उत्तराणि:
एक: कूर्मः अपि तत्रैव प्रतिवसति स्म।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् ……………
उत्तराणि:
अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि ।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्मं ………..
उत्तराणि:
वयं गृहं नीत्वा कूर्मं भक्षयिष्यामः।

प्रश्नः 5.पूर्णवाक्येन उत्तरत- (एक वाक्य में उत्तर दीजिए- Answer in one sentence.)

(क) कच्छपः कुत्र गन्तुम् इच्छति?
उत्तराणि:
कच्छपः आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति।

(ख) कच्छपः कम् उपायं वदति ?
उत्तराणि:
कच्छपः उपायं वदति-"युवां काष्ठदण्डम् चञ्च्वा धारयतम्, अहं काष्ठदण्डमध्ये अवलम्ब्य युवयोः पक्षबलेन सुखेन गमिष्यामि।"

(ग) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः किम् अवदन् ?
उत्तराणि:
लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अवदन्- "हंहो! महदाश्चर्यं हंसाभ्याम् सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।"

(घ) कूर्मः मित्रयोः वचनं विस्मृत्य किम् अवदत् ?
उत्तराणि:
कूर्मः मित्रयोः वचनं विस्मृत्य अवदत्-"यूयं भस्मं खादत।"

प्रश्नः 6.घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत- (घटनाक्रम के अनुसार वाक्यों को पुनः लिखिए- Rewrite the sentences in order as they took place.)

(क) कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत् ।
उत्तराणि:
कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।

(ख) पौरा: अकथयन्-वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः ।
उत्तराणि:
केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।

(ग) कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।
उत्तराणि:
'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारिष्यामः' इति धीवराः अकथयन् ।

(घ) केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।
उत्तराणि:
कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।

(ङ) कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।
उत्तराणि:
कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत् ।

(च) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अधावन्।
उत्तराणि:
लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अधावन्।

(छ) कूर्मः आकाशात् पतितः पौरैः मारितश्च ।
उत्तराणि:
पौराः अकथयन्-वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः ।

(ज) 'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारिष्यामः' इति धीवराः अकथयन्।
उत्तराणि:
कूर्मः आकाशात् पतितः पौरैः मारितश्च ।

प्रश्नः 7.मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत- (मञ्जूषा से शब्दों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- Fill in the blanks by choosing suitable words from the box.)

जलाशयम्, अचिन्तयत्, वृद्धः, दुःखिताः, कोटरे, वृक्षस्य, सर्पः, आदाय, समीपे ।

एकस्य वृक्षस्य शाखासु अनेके काका: वसन्ति स्म । तस्य वृक्षस्य 1. ……….. एकः सर्पः अपि अवसत् । काकानाम् अनुपस्थितौ 2. ………… काकानां शिशून् खादति स्म। काका: 3. ………… आसन्। तेषु एक: 4. …………. काकः उपायम् 5. …………. । वृक्षस्य 6. ………… जलाशयः आसीत्। तत्र एका राजकुमारी स्नातुं 7. ………….. आगच्छति । शिलायां स्थितं तस्याः आभरणम् 8. …………. एक: काकः वृक्षस्य उपरि अस्थापयत्। राजसेवकाः काकम् अनुसृत्य 9. ………….. समीपम् अगच्छन् । तत्र ते तं सर्पं च अमारयन् । अतः एवोक्तम्-उपायेन सर्वं सिद्धयति।
उत्तराणि:
1. कोटरे

2. सर्पः
3. दुःखिताः
4. वृद्धः
5. अचिन्तयत्
6. समीपे
7. जलाशयम्
8. आदाय
9. वृक्षस्य।

(1) गद्यांशं पठित्वा अधोदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत- (गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- Read the extract and answer the questions that follow.)

अथ एकदा धीवराः तत्र आगच्छन्। ते अकथयन्- "वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः।" एतत् श्रुत्वा कूर्मः अवदत्-"मित्रे! किं युवाभ्याम् धीवराणां वार्ता श्रुता? अधुना किम् अहं करोमि?" हंसौ अवदताम्-"प्रातः यद् उचितं तत्कर्त्तव्यम्।" कूर्मः अवदत्-"मैवम्। तद् यथाऽहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।" हंसौ अवदताम्-"आवां किं करवाव?" कूर्मः अवदत्-"अहं युवाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि।"

I. एकपदेन उत्तरत

(i) तत्र के आगच्छन्?
उत्तराणि:
धीवराः

(ii) कूर्मः केन मार्गेण गन्तुम् इच्छति स्म?
उत्तराणि:
आकाशमार्गेण

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) धीवराः किम् अकथयन्?
उत्तराणि:
धीवराः अकथयन्-'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः।'

(ii) कूर्मः हंसौ किम् अवदत्?

उत्तराणि:

कूर्मः हंसौ अवदत्-'यथा अहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।' अथवा-'अहं युवाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि'

III. भाषिककार्यम्

यथानिर्देशम् रिक्तस्थानानि पूरयत -

(i) ………………. अवदताम् ……………….

उत्तराणि:

अवदत्, अवदन्

(ii) गन्तुम् = ………………. धातुः ……………….प्रत्ययः

उत्तराणि:

गम्, तुमुन्

(iii) पर्यायम् लिखत- कच्छपः = ……………….

उत्तराणि:

कूर्मः

(iv) 'अहं युवाभ्याम् सह अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि'-अत्र वाक्ये द्वे अव्ययपदे के?

(i)……………….

(ii) ……………….

उत्तराणि:

(i) सह

(ii) अन्यत्र

(2) मञ्जूषायाः उचितं क्रियापदं चित्वा कथायां रिक्तस्थानानि पूरयत- (मञ्जूषा से उचित क्रियापद चुनकर कथा में रिक्तस्थान भरिए- Pick out the appropriate verb from the box and fill in the blanks in the story.) विस्मरति मारयिष्यामः, वदिष्यन्ति, गमिष्यामि, निवसतः, वसति, इच्छति, वदिष्यामि, भवति, पतति

एकस्मिन् सरोवरे द्वौ हंसौ . । तयोः मित्रम् एकः कूर्मः अपि तत्र । एकदा धीवराः तत्र आगच्छन् अकथयन् च-'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् । एतत् श्रुत्वा कूर्मः भयभीतः " । सः अन्यं

ह्रदं गन्तुम् .. । सः हंसौ उपायं वदति-'युवां चञ्चा काष्ठदण्डं धारयतम् अहं दण्डमध्ये अवलम्ब्य युवाभ्याम् सह आकाशमार्गेण ।' हंसौ वदतः-'जनाः त्वाम् आकाशे दृष्ट्वा विस्मिताः भविष्यन्ति किञ्चित् एव यदि त्वम् उत्तरं दास्यसि तर्हि भूमौ पतिष्यसि मरिष्यसि च।' कूर्मः प्रतिज्ञां करोति-'अहं किञ्चिद् अपि न .... ।' परं सः हंसाभ्याम् दत्तं वचनं ......दण्डात् ..."
मृत्यु च गच्छति।

उत्तराणि:

निवसतः, वसति, मारिष्यामः भवति, इच्छति, गमिष्यामि, वदिष्यन्ति, वदिष्यामि, विस्मरति, पतति।

(3) कः कम् प्रति कथयति। (कौन किसे कहता है- Who says to whom.)

उत्तराणि:

(i) कूर्मः, हंसौ

(ii) हंसौ, कूर्मम्

(iii) कूर्मः, हंसौ

(iv) कूर्मः, पौरान्।

(1) उचितविकल्पं चित्वा एकपदेन उत्तरत- (उचित विकल्प चुनकर एकपद में उत्तर दीजिए - Pick out the correct option and answer in one word.)

(i) केषां वचनं श्रुत्वा कूर्मः क्रुद्धः अभवत्? (हंसानाम्, धीवराणां, पौराणाम्)
उत्तराणि:
पौराणाम्

(ii) कूर्मः कम् अवलम्ब्य आकाशमार्गेण गच्छति? (ह्रदम्, काष्ठदण्डम्, उपायम्)
उत्तराणि:
काष्ठदण्डम्

(iii) के पतितं कूर्मं मारयन्ति? (धीवराः, हंसाः, पौराः)
उत्तराणि:
पौराः

(iv) कूर्मः हंसौ किम् वदति? (उत्तरम्, उपायम्, अपायम्)
उत्तराणि:
उपायम्

(v) कूर्मः कीदृशः आसीत्? (सुबुद्धि, चतुरः, दुर्बुद्धिः)
उत्तराणि:
दुर्बुद्धिः।

(2) (क) उचितेन विकल्पेन प्रत्येक प्रश्नम् उत्तरत रिक्तस्थानानि च पूरयत- (उचित विकल्प से चुनकर उत्तर दीजिए और रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- Fill in the blanks with suitable answer from the options given.)

'मित्राभ्याम् दत्तं वचनं विस्मृत्य सः अवदत्'-अस्मिन् वाक्ये

(i) 'मित्राभ्याम्' इति पदे का विभक्तिः? " ……………… (तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी)
उत्तराणि:
चतुर्थी [दत्तम्' (दा धातु) योगे]

(ii) 'अवदत्' इति क्रियापदस्य कः कर्ता? – (मित्राभ्याम्, वचनम्, सः)
उत्तराणि:
सः

(iii) 'विस्मृत्य' इति पदे कः प्रत्ययः? (क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्)
उत्तराणि:
ल्यप्

(iv) 'अवदत्' -अत्र कः लकार:? (लट्, लृङ् लृट्)
उत्तराणि:
लृङ्

(ख)
(i) कथमपि = ………….. + ……………… (कथ + मपि, कथम् + अपि, कथम + अपि)
उत्तराणि:
कथम् + अपि

(ii) तत्रैव = ... + ... (तत्र् + ऐव, तत्र + ऐव, तत्र + एव)

उत्तराणि:

तत्र + एव

(iii) पक्त्वा = ... + ...(पच् + क्त्वा, पक् + क्त्वा, प + क्त्वा)

उत्तराणि:

पच् + क्त्वा

(iv) नाभिनेन्दति = ... + ... (ना + अभिनन्दति, नाभि + नन्दति, न + अभिनन्दति)

उत्तराणि:

न + अभिनन्दति।

तृतीयः पाठः - स्वावलन्बनम्

➢ कठिन शब्दार्थाः

- समुद्ध- - धनी
- भृत्यः - नौकर
- आतिथ्यम् - अतिथि सत्कार
- कृषकदम्पती - किसान पति-पत्नी
- कर्मकरः - काम करने वाला
- साम्प्रतम् - अभी

➢ शब्दार्थाः

- सार्धद्वादशवादनम् - साढ़े बारह बजे
- चत्वारिंशत् - चालीस
- अष्टादश - अठारह
- प्रकोष्ठेषु - कमरों में
- पञ्चाशत् - पचास
- गवाक्षाः - खिड़कियाँ
- शक्नुवन्ति - सकते हैं

-
- सरलार्थ-
- 1-कृष्णमूर्ति श्रीकण्ठश्च मित्रे आस्ताम्। श्रीकण्ठस्य पिता समृद्धः आसीत्।
- अतः तस्य भवने सर्वविधानि सुख-साधनानि आसन्। तस्मिन् विशाले भवने चत्वारिंशत् स्तम्भाः आसन्। तस्य अष्टादश-प्रकोष्ठेषु पञ्चाशत् गवाक्षाः चतुश्चत्वारिंशत् द्वाराणि, षट्त्रिंशत् विद्युत्-व्यजनानि च आसन्। तत्र दश सेवकाः निरन्तरं कार्यं कुर्वन्ति स्म। परं कृष्णमूर्तेः माता पिता च निर्धनौ कृषकदम्पती। तस्य गृहम् आडम्बरविहीनं साधारणञ्च आसीत्।
- सरलार्थ-कृष्णमूर्ति और श्रीकण्ठ दो मित्र थे। श्रीकण्ठ के पिता धनवान थे। सिलिए उसके घर में सब प्रकार के सुख-साधन थे। उस बड़े घर में चालीस खम्बे थे। उसके अठारह कमरों में पचास खिड़कियाँ और चवालीस दरवाजे और छत्तीस पंखे थे। वहाँ दस नौकर हमेशा काम करते रहते थे परन्तु कृष्णमूर्ति के माता-पिता किसान पति-पत्नि थे। उसका घर में आडम्बर नही था और साधारण घर था।
- 2-एकदा श्रीकण्ठः तेन सह प्रातः नववादने तस्य गृहम् अगच्छत्। तत्र कृष्णमूर्तिः तस्य माता पिता च स्वशक्त्या श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम् अकुर्वन्। एतत् दृष्ट्वा श्रीकण्ठः अकथयत्-'मित्र, अहं भवतां सत्कारेण सन्तुष्टो-स्मि। केवलम् इदमेव मम दुःखं यत् तव गँहे एको-पि भृत्यः नास्ति। मम सत्काराय भवतां बहु कष्टं जातम्। मम गृहे तु बहवः कर्मकराः सन्ति।' तदा कृष्णमूर्तिः अवदत्-'मित्र, ममापि अष्टौ कर्मकराः सन्ति। ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे, द्वे श्रोत्रे इति। एते प्रतिक्षणं मम सहायकाः । किन्तु तव भृत्याः सदैव सर्वत्र च उपस्थिताः भवितुं न शक्नुवन्ति। त्वं तु स्वकार्याय भृत्याधीनः । यदा यदा ते अनुपस्थिताः, यदा यदा त्वं कष्टम् अनुभवसि। स्वावलम्बने तु सर्वदा सुखमेव, न कदापि कष्टं भवति।'
- सरलार्थ-एक बार श्रीकण्ठ उसके साथ सवेरे ने बजे उसके घर गया। वहाँ कृष्णमूर्ति और उसके माता पिता जी ने अपने सामर्थ्य से श्रीकण्ठ का अतिथि-सत्कार किया । यह देखकर श्रीकण्ठ ने कहा-'मित्र, मै तुम्हारे सत्कार से संतुष्ट हूँ। केवल यह बात मुझे दुःखीकर रही है कि तुम्हारे घर में एक भी सेवक नही है। जिससे मेरे सत्कार के लिए आप सब ने बहुत कष्ट सहा है।
- मेरे घर में तो बहुत से सेवक है।' तब कृष्णमूर्ति बोला-'मित्र, मेरे भी आठ नौकर हैं।और वे दो पैर, दो आँखें ,दो हाथ और दो कान हैं।ये हर पल मेरे सहायक हैं। परंतु तुम्हारे नौकर सदा सब जगह उपस्थित नहीं हो सकते। तुम तो अपने कार्य के लिए अपने सेवकों के अधीन हो। जब-जब वे अनुपस्थित होते हैं-तब-तब तुम कष्ट का अनुभव करते हो। स्वावलम्बन में हमेशा सुख ही है,कभी कष्ट नही होता।

- ३-श्रीकण्ठः अवदत्-मित्र, तव वचनानि श्रुत्वा मम मनसि महती प्रसन्नता जाता। अधुना अहमपि स्वयमेव कर्तुम् इच्छामि। भवतु ,सार्धद्वादशवादनमिदम्। साम्प्रतं गृहं चलामि।
- सरलार्थ-श्रीकण्ठ बोला-'मित्र, तुम्हारे वचनों को सुनकर मेरे मन में बहुत प्रसन्नता हुई। अब मै भी अपना काम स्वयं ही करूँगा।' ठीक है-अब साढ़े बारह बजे हैं । मैं अब घर चलता हूँ।

अभ्यासः

➢ साहित्य

प्र-2 अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) कस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन्?
उत्तर-श्रीकण्ठस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन्।

(ख) कस्य गृहेकोऽपि भृत्यः नास्ति?
उत्तर-कृष्णमूर्तेः गृहेकर्मकराः भृत्यः नास्ति।

(ग) श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम्के अकुर्वन्?
उत्तर-श्रीकण्ठस्य आतिथ्य म्कृष्णमूर्तेः पितरौ अकुर्वन्

(घ) सर्वदा कुत्र सुखम्?
उत्तर-सर्वदा स्वावलम्बने सुखम्।

(ङ) श्रीकण्ठः कृष्णमूर्तेःगृहं कदा अगच्छत्?
उत्तर-श्रीकण्ठः कृष्णमूर्तेः गृहं प्रातः नववादने अगच्छत्।

(च) कृष्णमूर्तेः कति कर्मकराः सन्ति?
उत्तर-कृष्णमूर्तेः अष्टौ कर्मकराः सन्ति।

➢ रचनात्मक-कार्यम्

प्र-3 चित्राणि गणयित्वा तदधः संख्यावाचक शब्दं लिखत-

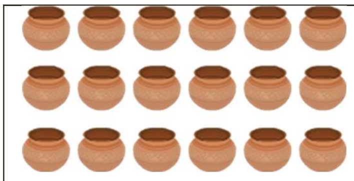	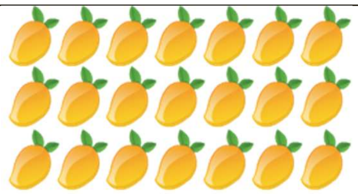	
अष्टादश	**एकविंशतिः**	**पञ्चदश**
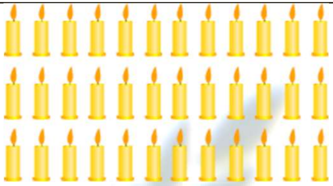	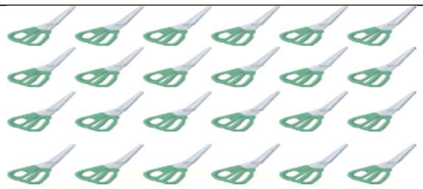	
षट्त्रिंशत्	**चतुर्विंशतिः**	**त्रयस्त्रिंशत्**

प्र–4 मञ्जूषातः अङ्कानां कृते पदानि चिनुत-

चत्वारिंशत्	सप्तविंशतिः	एकत्रिंशत्	पञ्चाशत्	अष्टाविंशतिः	त्रिंशत्	चतुर्विंशतिः

28	अष्टाविंशतिः	27	सप्तविंशतिः
30	त्रिंशत्	31	एकत्रिंशत्
24	चतुर्विंशतिः	40	चत्वारिंशत्
50	पञ्चाशत्		

प्र–5 चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-

कृषकाः	कृषकौ	एते	धान्यम्	एषः	कृषकः

एतौ	क्षेत्रम्	कर्षति	कुरुतः	खननकार्यम्	रोपयन्ति

(क) एषः कृषकः क्षेत्रम् कर्षति।
(ख) एतौ कृषकौ खननकार्यम् कुरुतः।
(ग) एते कृषकाः धान्यम् रोपयन्ति।

प्र–6 अधोलिखिता न्समयवाचकान् अङ्का न्पदेषु लिखत-

- 10.30 सार्ध द्दशवादनम्
- 5.00 पञ्चवादनम्
- 7.00 सप्तवादनम्
- 3.30 सार्धत्रिवादनम्
- 2.30 सार्धद्विवादनम्
- 9.00 नववादनम्
- 11.00 एकादशवादनम्
- 12.30 सार्धद्वादशवादनम्
- 4.30 सार्धचुतर्वादनम्
- 8.00 अष्टवादनम्
- 1.30 सार्धएकःवादनम्
- 7.30 सार्धसप्तवादनम्

प्र–7 मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

षड्	**त्रिंशत्**	**एकत्रिंशत्**	**द्वौ**	**द्वादश**	**अष्टाविंशतिः**

(क) **षड्** ऋतवःभवन्ति।

(ख) मासाः **द्वादश** भवन्ति।

(ग) एकस्मिन्मासे **त्रिंशत्** अथवा **एकत्रिंशत्** दिवसाःभवन्ति।

(घ) फरवरी-मासे सामान्यतः **अष्टाविंशतिः** दिनानिभवन्ति।

(ङ) मम शरीरे **द्वौ** हस्तौ स्तः।

चतुर्थः पाठः - हास्यबाल कवि सम्मेलनम

➢ कठिन शब्दार्थाः

- अधः - नीचे
- मादृशाः - मेरे जैसे
- हस्तलाघवम् - हाथ की सफाई
- तुन्दस्य - तोंद के
- आवर्तयन् - फेरता हुआ
- उत्प्रेरितः - प्रेरित होकर

➢ शब्दार्थाः

- कोलाहलम् - शोर
- धुरन्धराः - श्रेष्ठ
- स्वकीयम् - अपने
- प्रत्यर्पणम् - लौटाना
- भोज्यलोलुपम् - खाने का लोभी
- कालयापकाः - समय बर्बाद करने वाले

सञ्चालकः - अलं-----------------------------------कुर्मः ।

संचालक-शोर करने से बस करो। आज बहुत प्रसन्नता का अवसर है कि इस कवि सम्मेलन में काव्यहन्ता अर्थात काव्य को नष्ट करनेवाले और कालयापक अर्थात समय बर्बाद करनेवाले भारत के श्रेष्ठ हास्य कवि आए हुए हैं।आओ हम सब तालियों से इनका स्वागत करें।

गजाधरः - सर्वेभ्यो-रसिकेभ्यो ----------------------धनानि च।।

गजाधर- सब नीरस जनों को नमस्कार। तब तक पहले मैं आधुनिक वैद्यों को लक्ष्य करके अपनी कविता सुनाता हूँ-

हे वैद्यराज-यमराज के भाई, आपको नमस्कार है। यमराज तो प्राण को ले जाता है, आप वैद्य लोग प्राण के साथ धन भी ले जाते है।

(सभी जोर से हँसते हैं।)

ग-कालान्तकः - अरे-----------------------------------हस्तलाघवम्।

कालान्तक- अरे,वैद्य तो सब जगह है, परन्तु वे जनसंख्या कम करने में मेरे जैसे निपुण नहीं हैं।आप सब मेरे भी इस काव्य को सुनिए।

चिता को जलती हुई देखकर वैद्य ने आश्चर्य किया कि न मैं गया,न मेरा भाई,यह किसके हाथ की सफाई है।

(सभी जोर से हँसते हैं ।)

घ-तुन्दिलः तुन्दिलो,-----------------------------------पुनः पुनः ।।

तुन्दिल-मैं तुन्दिल हूँ ।(अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए-) अरे ,मेरी भी इस कविता को सुनो और जीवन में अपनाओ- दुष्टबुद्धिवाले ,दूसरे का अन्न प्राप्त करके शरीर पर दया मत कर।संसार में दूसरे का अन्न दुर्लभ है। शरीर बार-बार मिलता रहता है।

(सभी जोर से हँसते हैं।

ङ-चार्वाकः -आम्, आम्-------------------------पिबेत ।।

बालकः--------------------------------------च नमाम्यहम्।।

चार्वाक- हाँ,हाँ। शरीर का पोषण हमेशा ही ठीक रहता है। अगर धन नहीं है। तब कर्ज लेकर भी पौष्टिक पदार्थों का ही उपभोग करना चाहिए। और चार्वाक कवि कहते है-

जब तक जियो ,कर्ज लेकर भी घी पियो।

श्रोतागण-तो कर्ज को कैसे चुकाया जाए।

चार्वाक-मेरी बची हुई कविता भी सुनिए-

घी पीकर ,परिश्रम करके लोगों को कर्ज वापस कर देना चाहिए।

(काव्य पाठ से प्रेरित हो कर एक बालक भी तुरंत कविता की रचना करता है और हँसते हुए सुनाता है-)

बालक-अरे सुनो ,सुनिए, मेरी भी कविता-

गजाधर कवि और खाने के लोभी तुन्दिल,कालान्तर को तथा वैद्य चार्वाक को मैं प्रणाम करता हूँ।

(कविता सुनकर सभी हा,हा,हा करके सभी जोर से हँसते हैं और सभी अपने घर जाते हैं।)

अभ्यासः

➢ साहित्य

प्र–2 मञ्जूषातः अव्यय पदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

अलम्	अन्तः	बहिः	अधः	उपरि

(क) वृक्षस्य उपरि खगाःवसन्ति।

(ख) अलम् विवादेन।

(ग) वर्षाकाले गृहात् बहिः मागच्छ।

(घ) मञ्चस्य अधः श्रोतारः उपविष्टाः सन्ति।

(ङ) छात्राः विद्यालयस्य अन्तः प्रविशन्ति।

प्र–3 अशुद्धं पदं चिनुत-

(क) **गमन्ति**, यच्छन्ति, पृच्छन्ति,धावन्ति।

(ख) रामेण, गृहेण, सर्पेण, **गजेण**।

(ग) लतया ,**मातया**, रमया, निशया।

(घ) लते, रमे, **माते**, प्रिये।

(ङ) लिखति, गर्जति, फलति, **सेवति।**

प्र–4 मञ्जूषातः समानार्थक पदानि चित्वा लिखत-

प्रसन्नतायाः	चिकित्सकम्	लब्ध्वा	शरीरस्य	दक्षाः

- प्राप्य लब्ध्वा
- कुशलाः दक्षाः
- हर्षस्य प्रसन्नतायाः
- देहस्य शरीरस्य
- वैद्यम् चिकित्सकम्

प्र–5 अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) मञ्चे कति बालकवयः उपविष्टाः सन्ति?

उत्तर–मञ्चे चत्वारः बालकवयः उपविष्टाः सन्ति।

(ख) के कोलाहलं कुर्वन्ति?

उत्तर– श्रोतारः कोलाहलं कुर्वन्ति।

(ग) गजाधरः कम् उद्दिश्य काव्यं प्रस्तौति?

उत्तर–गजाधरः आधुनिकं वैद्यम् उद्दिष्य काव्यं प्रस्तौति।

(घ) तुन्दिलः कस्य उपरि हस्तम् आवर्त्तयति?

उत्तर–तुन्दिलः तुन्दस्य उपरि हस्तम् आवर्त्तयति।

(ङ) लोके पुनःपुनः कानि भवन्ति?

उत्तर–लोके पुनःपुनः शरीराणि भवन्ति।

(च) किं कृत्वाघृतं पिबेत्?

उत्तर–श्रमं कृत्वा घृतं पिबेत्

➢ रचनात्मक–कार्यम्

प्र–6 मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथायाः पूर्तिं कुरुत-

नासिकायामेव	वारंवारम्	खड्गेन	दूरम्	मित्रता	मक्षिका
व्यजनेन	उपाविशत्	छिन्ना	सुप्तः	प्रियः	

पुरा एकस्य नृपस्य एकः प्रियः वानरः आसीत्। एकदा नृपः सुप्तः आसीत्। वानरः व्यजनेन तम् अवीजयत्। तदैव एका मक्षिका नृपस्य नासिकायाम् उपाविशत्। यद्यपि वानरः वारंवारम् व्यजनेनतां निवारयति स्म तथा पिसा पुनःपुनः नृपस्य नासिकाया मेव उपविशति स्म। अन्ते सः मक्षिकां हन्तुं खड्गेन प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय दूरम् गता, किन्तु खड्ग प्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत्। अत एवोच्यते-
'' मूर्ख जनैः सह मित्रता नोचिता।"

- **व्याकरण**

प्र–7 विलोमपदानि योजयत-

- अधः उपरि
- अन्तः बहिः
- दुर्बुद्धे! सुबुद्धे!
- उच्चैः नीचैः
- दुर्लभम् सुलभम्